1 संदेश

तरंग पर्वत मृदुल उमंग

पृथ्वी संसार शीश धैर्य

पर्वत कहता शीश उठाकर,
तुम भी ऊँचे बन जाओ।
सागर कहता है लहराकर,
मन में गहराई लाओ।

समझ रहे हो, क्या कहती है,
उठ-उठ, गिर-गिर तरल तरंग
भर लो, भर लो, अपने मन में,
मीठी-मीठी मृदुल उमंग।

पृथ्वी कहती धैर्य न छोड़ो,
कितना ही हो सिर पर भार।
नभ कहता है फैलो इतना,
ढक लो तुम सारा संसार।

—सोहनलाल द्विवेदी

Scanned with CamScanner

शब्द-अर्थ

तरल – बहने वाला ; तरंग – लहर ; मृदुल – कोमल ; उमंग – खुशी ; भार – बोझ ; नभ – आसमान।

पाठ कौशल

प्रश्नों के उत्तर लिखो-

1. पर्वत शीश उठाकर क्या कहता है?

2. सागर हमें क्या सिखाता है?

3. तरंग हमें क्या शिक्षा देती है?

4. पृथ्वी हमें क्या संदेश देती है?

5. आकाश हमसे क्या कहता है?

6. इस कविता में कवि ने प्रकृति की किन वस्तुओं का उल्लेख किया है?

इन पंक्तियों का भावार्थ लिखो-

1. सागर कहता है लहराकर,
   मन में गहराई लाओ।

2. पृथ्वी कहती धैर्य न छोड़ो,
   कितना ही हो सिर पर भार।

3. नभ कहता है फैलो इतना,
   ढक लो तुम सारा संसार।

Scanned with CamScanner

सही मेल मिलाओ–

अ	आ
1. आकाश	(i) धैर्य
2. पर्वत	(ii) विस्तार
3. सागर	(iii) ऊँचाई
4. तरंग	(iv) गहराई
5. पृथ्वी	(v) उमंग

भाषा कौशल

इन शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची लिखो–

पर्वत _____ _____ _____

सागर _____ _____ _____

पृथ्वी _____ _____ _____

नभ _____ _____ _____

संसार _____ _____ _____

इन शब्दों से वाक्य बनाओ–

गहराई _____

तरंग _____

मृदुल _____

धैर्य _____

भार _____

Scanned with CamScanner